विश्वास के कार्यः अपने विश्वास के दावे के अनुसार जीना

विश्वास आज्ञा मानता है

डॉ. डेविड प्लैट

मसीह की देह का अंग होना भला है। हम याकूब 1:19–25 पर आने वाले हैं। मैं ने योजना बनाई थी कि हम पद 27 तक जायेंगे, परन्तु आज सुबह हम पद 25 पर रूकेंगे।

याकूब 1:19. मैं चाहता हूँ कि हम इस पद को पढ़ें, फिर मैं कुछ बातों को बाँटना चाहता हूँ जिन्हें परमेश्वर मेरे जीवन में कर रहा है और आशा है कि उससे हमें इस पद को समझने में सहायता मिलेगी। याकूब 1:19,

> हे मेरे प्रिय भाइयो, यह बात तुम जान लोः हर एक मनुष्य सुनने के लिए तत्पर और बोलने में धीर और क्रोध में धीमा हो, क्योंकि मनुष्य का क्रोध परमेश्वर के धर्म का निर्वाह नहीं कर सकता। इसलिए सारी मलिनता और बैर भाव की बढ़ती को दूर करके, उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है।
>
> परन्तु वचन पर चलने वाले बनो, और केवल सुनने वाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं। क्योंकि जो कोई वचन का सुनने वाला हो और उस पर चलने वाला न हो, तो वह उस मनुष्य के समान है जो अपना स्वाभाविक मुँह दर्पण में देखता है। इसलिए कि वह अपने आप को देखकर चला जाता और तुरन्त भूल जाता है कि मैं कैसा था। पर जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिए आशीष पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं पर वैसा ही काम करता है। (भजन 1:19–25).

हे परमेश्वर, हमारी प्रार्थना है आप हमारी सहायता करें कि हम केवल वचन को सुनें ही नहीं। उसमें ध्यान से देखने में हमारी सहायता करें, परन्तु परमेश्वर, एक और कदम आगे बढ़कर उसका पालन करने में हमारी सहायता करें। और परमेश्वर, हमारी प्रार्थना है कि आप हमें विश्वास का परिवार, मसीह की देह बनाएँ, केवल सुनने वाले नहीं, बल्कि ऐसी छाप वाले जो सुनने वाले वचन को मानते हैं। और हमारी प्रार्थना है कि

आप याकूब 1:19–25 के आधार पर विश्वास को हमारे अन्दर, इस कलीसिया में, इस शहर में, सारे देशों में जीवन्त करें। हमारी प्रार्थना है, अपने आत्मा के द्वारा आज सुबह हमें सिखा। यीशु के नाम में। आमीन।

आरम्भ में मैं आप सबसे जो बात बाँटना चाहता हूँ उन्हें न बाँटने के लिए मैं कई कारणों को सोच सकता हूँ। और उन बहुत से कारणों में से एक कारण यह है कि मैं जानता हूँ कि जो कुछ मैं बाँटना चाहता हूँ उसे कुछ लोग वर्णनात्मक रूप में लेने की बजाय आदेश के रूप में लेंगे। और इससे मेरा मतलब यह हैः जब हम पवित्रशास्त्र पर आते हैं, उदाहरण के लिए, पवित्रशास्त्र में कुछ बातें आदेशात्मक हैं, वे बताती हैं कि हमें क्या करना चाहिए, हमें कैसे जीना चाहिए, आज्ञाएँ, निर्देश। जब पवित्रशास्त्र कहता है यह कर, तो यह आदेश दे रहा है। परन्तु फिर पवित्रशास्त्र के दूसरे भाग हैं जो यह कहने की बजाय कि हमें क्या करना चाहिए किसी घटना विशेष के बारे में वर्णन करते हैं। अब, अक्सर उनके निहितार्थ होते हैं कि हमें क्या करना चाहिए, परन्तु केवल इस कारण हमें किसी कार्य को करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इसका बाइबल में वर्णन किया गया है। पवित्रशास्त्र में पुराने नियम में कुछ कहानियाँ हैं जैसे बिलाम का गधे से बात करना, ठीक? वर्णनात्मक। ठीक? आदेश नहीं। हमें आदेश नहीं दे रही कि परमेश्वर के लोगों के रूप में हमें जाकर गधों से बात करनी चाहिए।
अतः हमें सावधान रहना है कि जब भी हम पवित्रशास्त्र की व्याख्या करें तो विभिन्न पदों की ठीक एवं उचित व्याख्या करें।

और जो बात मैं आप से बाँटना चाहता हूँ उसके बारे में मैं नहीं चाहता कि आप उसे आदेशात्मक रूप में सुनें, जैसे कि पासबान कह रहे हों, "मेरा सोचना है कि सबको ऐसा ही करना चाहिए।" यह पिछले वर्ष के दौरान आपके पासबान के जीवन में परमेश्वर के कार्य का वर्णन मात्र है– और कुछ नहीं। केवल परमेश्वर का कार्य मेरे जीवन में और मेरे परिवार के जीवन में। केवल कल्पना करें कि अगले कुछ पल आप एक गधे की बात को सुन रहे हैं, और उसके महत्व के अनुसार आप उसे ग्रहण करें।

इस श्रंखला के आरम्भ में लगभग एक वर्ष पूर्व मैं ने इस विश्वास के परिवार से बताया था, कुछ ऐसी बातों के बारे में जिनके बारे में परमेश्वर मुझे कायल कर रहा था कि मेरे जीवन के कुछ क्षेत्रों का परमेश्वर के वचन के साथ सामंजस्य नहीं है, विशेषतः उन बातों के बारे में जब संसार के खोए हुओं और निर्धनों की बात आती है। और उन्हीं के बारे में पिछले कुछ समय से मैं विचार करता आ रहा था, परन्तु मैं ने परमेश्वर की आवाज को अनसुना कर दिया था। मैं ने परमेश्वर को चुप कर दिया। और उसके अनुग्रह के द्वारा, मेरी अनाज्ञाकारिता और उसके द्वारा सौंपे गए संसाधनों के संबंध में हृदय की कठोरता के बावजूद वह

विश्वासयोग्यता से मेरे साथ चलता रहा। खोए हुओं और निर्धनों की आवश्यकता के प्रकाश में, वह मुझे स्पष्ट रूप से दिखा रहा था कि मैं अपना जीवन कैसे जी रहा था, अपने संसाधनों को कैसे व्यय कर रहा था, अपने परिवार को कैसे चला रहा था, परमेश्वर के वचन के साथ सामंजस्य में नहीं था।

चार वर्ष पूर्व इस समय, कैटरीना तूफान के कारण हमारा जीवन अस्त–व्यस्त हो गया था। और न्यू ऑरलेन्स में हमारा घर पानी में डूब गया था, और अटारी पर रखी कुछ वस्तुओं के अलावा हमने सब कुछ खो दिया था। और एक अर्थ में, हमारे पास एक मौका था, एक स्वर्णिम अवसर, कि हम फिर से आरम्भ करें और अपने संसाधनों का बुद्धिमानी से प्रयोग करते हुए निर्माण करें। और यथार्थ यह है कि एक वर्ष के बाद इस शहर में हमारे पास इतना सब था जितना पहले कभी नहीं था। और इस प्रकार, एक प्रक्रिया शुरू हुई और हम सहज हो रहे थे, सब कुछ अच्छी तरह से चल रहा था जब तक कि परमेश्वर ने यह नहीं कहा, "इन सब से तुम्हारे विश्वास में और वचन जो कहता है उसके अनुसार तुम्हारे जीवन में कोई बढ़ोतरी नहीं हो रही है।" और वर्ष पहले यह सब मेरे दिमाग में आया, और परमेश्वर ने अपने अनुग्रह से, मेरे हृदय को नरम किया और मुझे दिखाने लगा, "तुम्हें यह करना है।"

और बहुत सारी बातें हैं जो उस तस्वीर से जुड़ी हैं, परन्तु जिस घर में हम रहते हैं उसके संबंध एक बड़ी बात यह थी कि हमें बेहतर भण्डारी बनने की आवश्यकता थी क्योंकि जिस घर में हम रहते थे वहाँ परमेश्वर के संसाधनों का सर्वोत्तम भण्डारीपन नहीं था। और इस प्रकार, मैं ने अपनी प्रिय पत्नी से इसके बारे में बातचीत करने के संबंध में बात करना शुरू किया।

मेरी बहुमूल्य पत्नी एक हीरा है जिसके, परमेश्वर के अनुग्रह से, मैं योग्य नहीं हूँ। और एक दिन हम दोनों एक साथ बैठे, मुझे अच्छी तरह याद है, और उन बातों के बारे में बात करने लगे जो परमेश्वर मुझे सिखा रहा था, और उनके व्यवहारिक प्रभावों के बारे में बात करने लगे, और इसके बारे में बात करने लगे कि कैसे मुझे लग रहा था कि हमें अपने घर को बेचने की आवश्यकता है। और यह उस समय तक का सबसे सुहावना, सरल वार्तालाप नहीं था। इसलिए नहीं कि मेरी पत्नी मेरे जैसी नहीं है और परमेश्वर के वचन को नहीं मानना चाहती, या शारीरिक है या भौतिकता से प्रेम करती है। तस्वीर यह है कि तूफान में पुराने घर के नष्ट होने के बाद से उस वार्तालाप के समय तक, दो वर्षों से मेरी पत्नी अपना दिल उस घर को बसाने में लगाए हुए थी जो मेरे और हमारे दो बच्चों के लिए एक शरणस्थान होगा। और मेरे कहने का मतलब था, मुझे लगता है कि हमें यह सब बदलने की आवश्यकता है।

और हमने एक साथ प्रार्थना करना शुरू किया। और अगले महीने हमने अपने घर को बेचने की प्रक्रिया आरम्भ कर दी। अत्यधिक आर्थिक मन्दी के कारण, पिछले वर्ष का वह समय घर को बेचने के लिए अच्छा नहीं था। विक्रय के मामले में बहुत कम कीमतों के रिकॉर्ड उस वर्ष बने। वास्तविकता यह है कि हमने अपने घर को अत्यधिक ऊँची कीमत पर खरीदा था और अब उसे बहुत ही कम कीमत के समय पर बेच रहे थे।

इसके परिणामस्वरूप, हर मोड़ पर सवाल उठाए गए। क्या हमें वास्तव में ऐसा करना चाहिए था? क्या यह सही है? क्या यह सबसे अच्छा समय है? और हर मोड़ पर यह कहने की परीक्षा थी कि नहीं, हम इसे नहीं करेंगे। और हालत यहाँ तक हो गई कि घर में कोई छोटी सी मरम्मत का काम होने पर भी हम कहते कि जब हम इस घर को बेचने जा रहे हैं तो इस पर और अधिक पैसा लगाना ठीक नहीं है। हम इन में से कुछ भी अपने पास नहीं रख पायेंगे।

अतः हम घरों की खोज करने लगे। इस सारी यात्रा में हम इन्टरनेट पर जाते और घरों को देखते और अपनी सूचियों के साथ एक साथ बैठते। हमारी सूचियों में ज्यादा दोहराव नहीं था।

इस पूरी प्रक्रिया के दौरान, बहुत से सवाल थे जिनका अक्सर कोई जवाब नहीं था। उतार–चढ़ाव, इसे या उसे समझने की कोशिश, और हर कदम पर सोचना कि क्या हम जो कर रहे हैं वह सही है।

और इस सब की समाप्ति इस पिछले सप्ताह हुई जब मैं ने एक घर से सामान बाँधकर दूसरे घर में जाने के लिए दो दिन लगाए। परमेश्वर ने हमारी कल्पना से कहीं बढ़कर उपलब्ध करवाया था और इसे उन्हीं लक्ष्यों के अनुरूप किया था जिस प्रकार हम करना चाहते थे।

और यह सब मैं यह बताने के लिए नहीं कह रहा हूँ कि, "पासबान का सोचना है कि हर व्यक्ति को अपना घर बेच देना चाहिए।" किसी भी तरह से यह आदेश नहीं है कि सबको ऐसा करना चाहिए। मैं केवल बता रहा हूँ कि परमेश्वर ने मेरे जीवन में क्या किया है। मुझे पता है कि आपके बीच में इससे भी गहरी कहानियाँ हैं।

हमारे विश्वास के परिवार में एक परिवार है जिसमें नौ बच्चे एक ही शौचालय से काम चला रहे हैं। और डैनी, जिसने अभी बपतिस्मा लिया है, वह कल यूगाण्डा में एक स्थान पर जा रहा है जहाँ न पानी और न बिजली और वह एक छोटी झोंपड़ी में रहेगा।

अतः हर प्रकार की कहानियाँ हैं। फ्रैंक और रेबेका जिनके लिए हमने प्रार्थना की, मुझे याद है कि उन्होंने कहा, "हम इस बिन्दू पर आ गए हैं जहाँ हमने अपने आप से पूछा, क्या हम इस वचन पर विश्वास करेंगे या नहीं? और यदि हाँ, तो हमें यह करने की जरूरत है।" अतः बात यह है भाइयो और बहनो, कि वचन को केवल सुनें ही नहीं। इसे करें। करने से सुनना कहीं आसान है।

और आज हम एक ऐसी कलीसियाई संस्कृति में रहते हैं जो सुनने से आनन्दित होती है, लेकिन करने से भागती है। और यह विशेष रूप से हमारे लिए खतरनाक है। विश्वास के परिवार के लिए इस सप्ताह इस वचन को पढ़ते समय मैं बोझिल हुआ। वचन के लिए आपकी भूख के कारण, और जिस प्रकार से हम एक साथ मिलकर वचन का अध्ययन करते हैं, मेरी आशा है कि यह हमारी प्राथमिकता है। परन्तु हमें वास्तव में सावधान होने की आवश्यकता है क्योंकि यदि हम वचन को सुनने वाले और वचन का अध्ययन करने वाले लोगों के रूप में जाने जाते हैं, तो इस सम्पूर्ण बिन्दू से चूक जायेंगे। और यदि हम केवल सुनते हैं, तो हम अपने आप को धोखा दे रहे हैं, और ब्रूक हिल्स की कलीसिया में हमारा धर्म व्यर्थ है।

वचन का प्रत्युत्तर देने की तीन रीतियाँ

अतः मैं आपको उत्साहित करना चाहता हूँ, परमेश्वर आपके जीवन में जो कुछ भी कर रहा है मैं उसमें आपके साथ खड़ा होना चाहता हूँ और याकूब 1:19–25 के आधार पर मैं आपको वचन को कार्य में ढ़ालने के लिए प्रेरित करना चाहता हूँ। मैं आपके साथ उन तीन रीतियों को बाँटना चाहता हूँ जिनसे हम वचन का प्रत्युत्तर देते हैं। पद 19 से 25 में यह वास्तव में रूचिकर है। वचन का बार–बार वर्णन किया गया है। जैसे पद 21 में, जब भी आप इसे देखें उस पर निशान लगाएँ। *"इसलिए सारी मलिनता और बैर भाव की बढ़ती को दूर करके, उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है।"* पद 21 के अन्त में "वचन" को रेखांकित करें। पद 22, "वचन के केवल सुनने वाले ही न बनो।" इस पर निशान लगाएँ। पद 23, "जो कोई वचन को सुनने वाला हो।" इस पर निशान लगाएँ।

फिर आप पद 25 पर आते हैं। और इसके बारे में हम बाद में बात करेंगे। वह शब्द को बदलता है, लेकिन तस्वीर वही है, *"पर जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है।"* "व्यवस्था" शब्द पर निशान लगाएँ, और हम देखेंगे कि वह यहाँ शब्दों को क्यों बदलता है। और अन्तिम पद पर भी जाएँ जिसे हमने पिछले प्रचार में देखा था, पद 18, *उसने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया।"* इस पर निशान लगाएँ। आप एक विषय को बार–बार देखते हैं। और याकूब अध्याय 1 में हमें दिखा रहा है कि हम परखों का प्रत्युत्तर कैसे देते हैं, फिर दिखाता है कि परीक्षाओं का प्रत्युत्तर कैसे दें। और अब वह हमें दिखाने वाला है कि हम सत्य का प्रत्युत्तर कैसे दें। परख, परीक्षाएँ, सत्य, परमेश्वर के वचन का सत्य। हम अपने जीवनों में वचन का प्रत्युत्तर कैसे देते हैं?

वचन को नम्रता से ग्रहण करें

प्रत्युत्तर की तीन रीतियाँ। ये आसान हैं, लेकिन यदि ये तीन सत्य हमारे हृदयों में बैठ जाएँ, तो यह हमारी संस्कृति और इस कलीसिया में मसीहियत की तस्वीर को पूरी तरह बदल देगा।

वचन का प्रत्युत्तर देने के तीन तरीके, पहला, वचन को नम्रता से ग्रहण करना। *"हर एक मनुष्य सुनने में तत्पर हो"* (याकूब 1:19). यथार्थ में भाषा है, "जल्दी से सुनो।" "वचन को जल्दी से सुनो।" बोलने में धीमा हो। चुप रहो और सुनो। *"और क्रोध में धीमा हो।"* (याकूब 1:19). नम्रता से सुनना, न कि अपना बचाव करते हुए, जो क्रोध और वचन के विरोध की ओर ले जाता है। आप इसके बारे में सोचें। क्या हम अक्सर सुनने की बजाय बोलते हुए वचन के पास नहीं जाते हैं? आप जानते हैं मेरा मतलब क्या है? शायद बाहरी रूप से बोलते हुए नहीं, परन्तु हम पहले से अपना मन बनाकर वचन को सुनते हैं कि हमें अपना जीवन कैसे बिताना है, और हमें क्या करना चाहिए और यदि वचन उसके विपरीत हो तो हम सोचते हैं कि वह भाग शायद वचन के दूसरे भागों जितना आत्मा द्वारा प्रेरित नहीं है।

या नम्रता से आने की बजाय हम वचन को अपनी जीवन शैली के अनुरूप बनाने के लिए उसमें तोड़–मरोड़ करते हैं, बोलने में धीमे, अपना बचाव करते हुए नहीं, परन्तु सुनने के लिए तैयार। यह परमेश्वर के लोगों द्वारा वचन का इस प्रकार सुनने से विरोध करने का इतिहास है। पुराने नियम में भविष्यद्वक्ता वचन की घोषणा करते हैं, और लोग नम्रता से नहीं सुनते हैं। इस्राएलियों ने इसी प्रकार यीशु का प्रत्युत्तर दिया। इसी तरह यहूदियों ने पौलुस को प्रत्युत्तर दिया। वह आराधनालय आकर वचन का प्रचार करना शुरू करता, और वे उसे बाहर घसीट कर ले जाते और पत्थरवाह करते।

मैं ईमानदार रहूँगा, इस सप्ताह परमेश्वर के लोगों के इतिहास के बारे में सोचते हुए मैं ज्यादा उत्साहित नहीं हुआ। परमेश्वर के लोग परमेश्वर के वचन की घोषणा करने वालों के साथ जो करते हैं वह एक प्रचारक के लिए उत्साहजनक नहीं है। उन्होंने भविष्यद्वक्ताओं, या यीशु, या प्रेरितों के साथ जो कुछ किया। और तस्वीर यह है कि परमेश्वर के लोगों का इतिहास हमें याद दिलाता है कि हर मोड़ पर नम्रता से परमेश्वर के वचन तक न जाने और उसे न सुनने की परीक्षा है। हम लूका 12 जैसे पदों पर आतें जब यीशु कहते हैं, "अपनी संपत्ति बेचकर कंगालों को दे दे।" और हम सोचते हैं, "मैं इससे कैसे बचूँ?" हमें याद रखना है कि लक्ष्य वचन से बचना नहीं बल्कि उसे ग्रहण करना है। हम इसे कैसे ग्रहण करते हैं? याकूब कहता है, पद 21, "सारी मलिनता और बैर भाव को दूर करो।" दूर करो, शाब्दिक अर्थ में "उतार दो," जैसे आप अपने वस्त्र उतारते हैं। सारी मलिनता और बुराई को उतार दो। परमेश्वर के वचन के हमारे अध्ययन में हम इस संसार से बहुत से विचार लेकर आते हैं, पापपूर्ण विचार, स्वार्थी विचार। हमें खाली चैक के साथ वचन के पास आकर कहना चाहिए, "मैं इसे नम्रता से ग्रहण करना चाहता हूँ। मैं इसे नम्रता से ग्रहण करना चाहता हूँ। और वह जो कहता है उसे सुनना चाहता हूँ।" मुझे यह भाषा पसन्द है, "अपने मन में बोए गए वचन को नम्रता से ग्रहण करो।"

अब, हमें यहाँ थोड़ा मुड़ना है, परन्तु आपको इसे देखना है। याकूब 1 में अपने स्थान को थामे रहें। मेरे साथ यिर्मयाह पर चलें। यिर्मयाह अध्याय 31 पर। यदि पुस्तकों के नामों की सारणी को देखना चाहते हैं तो आप ऐसा करने की आजादी है। यिर्मयाह अध्याय 31. मैं आपको आपकी बाइबल में एक परिच्छेद दिखाना चाहता हूँ जिसे यदि आपने रेखांकित नहीं किया है, तो उसे आपको रेखांकित करने की आवश्यकता है। यह यिर्मयाह की पुस्तक में निश्चित रूप से सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिच्छेदों में से एक है, मैं कहूँगा पूरे पुराने नियम में क्योंकि यह परमेश्वर के लोगों के लिए नई वाचा के बारे यिर्मयाह की भविष्यद्वाणी है जो आ रही है और कैसे मसीह में सब कुछ बदल जाएगा।

यिर्मयाह 31:31. तस्वीर यह है। याकूब 1 में इस रूप को पाया, वचन तुम्हारे अन्दर बोया गया है, तुम्हारे अन्दर जड़ पकड़े है। अब यह सम्पूर्ण रूपक उस पर आधारित है जिसे परमेश्वर ने पुराने नियम में करने का वायदा किया था। यिर्मयाह 31:31 को सुनें, *"फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आने वाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बाँधूँगा। वह उस वाचा के समान न होगी जो मैं ने उनके पुरखाओं से उस समय बाँधी थी जब मैं उनका हाथ पकड़ कर उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया, क्योंकि यद्यपि मैं उनका पति था, तौभी उन्होंने मेरी वह वाचा तोड़ डाली।"* (यिर्मयाह 31:31–32). पद 33 को देखें। जब याकूब 1 की इस तस्वीर की बात आती है तो यह मुख्य वचन है। *"परन्तु जो वाचा मैं उन*

दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बाँधूँगा, वह यह है: मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूँगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यह वाणी है।" (यिर्म. 31:33). क्या आपने इसे समझा? "मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊँगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा।"

दाँयी तरफ दो पुस्तक आगे यहेजकेल 36 पर आएँ। मैं आपको एक और जगह दिखाता हूँ। परमेश्वर यिर्मयाह के द्वारा कह रहा है, "एक दिन आ रहा है जब मेरी व्यवस्था मेरे लोगों के हृदयों पर लिखी जाएगी, उनके मनों में और उनके दिलों पर लिखी जाएगी।" और फिर देखें किस प्रकार यहेजकेल भी उसी रूपक को लेता है। इसे थोड़ी अलग रीति से बताता है, लेकिन इस तस्वीर को देखें। यहेजकेल 36:24, पुनः, पुराने नियम के वास्तविक महत्वपूर्ण स्थानों में से एक जो हमें आने वाली नई वाचा की तस्वीर देते हैं।

> (परमेश्वर अपने लोगों से कहता है) *मैं अपने बड़े नाम को पवित्र ठहराऊँगा, जो जातियों में अपवित्र ठहराया गया, जिसे तुम ने उनके बीच अपवित्र किया; और जब मैं उनकी दृष्टि में तुम्हारे बीच पवित्र ठहरूँगा, तब वे जातियाँ जान लेंगी कि मैं यहोवा हूँ, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है। मैं तुम को जातियों में से ले लूँगा, और देशों में से इकट्ठा करूँगा; और तुम को तुम्हारे निज देश में पहुँचा दूँगा। मैं तुम पर शुद्ध जल छिड़कूँगा, और तुम शुद्ध हो जाओगे; और मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूरतों से शुद्ध करूँगा। मैं तुम को नया मन दूँगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा, और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुम को मांस का हृदय दूँगा। मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूँगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे।* (यहेजकेल 36:24–27).

क्या आपको वह भाषा समझ में आई? सामर्थी भाषा। "मैं अपनी व्यवस्था तुम्हारे हृदय में रखूँगा, अपना आत्मा तुम्हारे हृदय में दूँगा, और परमेश्वर के वचन के द्वारा परमेश्वर का आत्मा तुम्हारे अन्दर कार्य करेगा।" यह सामर्थी है। पुराने नियम के संत इसी की लालसा रखते थे जो याकूब कह रहा है, "भाइयो और बहनो, परमेश्वर का वचन तुम्हारे अन्दर बोया गया है। और उसका आत्मा तुम्हारे अन्दर वास करता है, रहता है कि तुम से कार्य करवाए।"

अब इस तस्वीर के साथ याकूब 1 पर आएँ। और हमने बात की कि यह पुस्तक मुख्यतः यहूदी मसीहियों के लिए लिखी गई है। इस पृष्ठभूमि के साथ, नम्रता से उस वचन को ग्रहण करो जो तुम में बोया गया है।

यह वचन तो तुम्हारे अन्दर है, उसे ग्रहण करो। उसने अपने वचन को तुम्हारे हृदय में डाला है। उसने अपनी व्यवस्था को तुम्हारे हृदयों पर लिखा है। इसलिए जब तुम इसे सुनते हो, जब तुम इसे सुनते हो, यह तुम्हारे हृदय को उसी तरह पोषण देता है जैसे लहू तुम्हारे हृदय को और ऑक्सीजन तुम्हारे फेफड़ों को बल देती है। अतः यह वचन आपके जीवन को बल देता है।

वह कहता है, "परमेश्वर के वचन के महत्व, उसकी सामर्थ को कम करके न आँकें, जो तुम्हें बचा सकता है।" और पद 18 में उस ने इसी के बारे में बात की थी, "उसने अपनी ही इच्छा से हमें सत्य के वचन के द्वारा उत्पन्न किया।" यह वचन जो हमारे दिल में है वह हमें उद्धार देता है। विश्वास सुनने के द्वारा, और सुनना परमेश्वर के वचन से होता है (रोमियों 10:17). इसी प्रकार हमें बचाया जाता है, परमेश्वर का वचन हमारे हृदयों में जड़ पकड़ता है, हमारे पाप के बारे में हमारी आँखों को खोलता है, और परमेश्वर की महिमा और मसीह की पर्याप्तता, और उस पर भरोसे के द्वारा वचन हमें बचाता है।
यह सहेजने योग्य धन है। इसलिए इसे नम्रता से ग्रहण करें। अमरीकी सपने के अनुसार घुमाने की इच्छा से, इसे अपनी या मेरी जीवन शैली के अनुसार बदलने के लिए वचन के पास न आएँ। नम्रता से वचन की ओर आएँ और यह जो कहता है उसे ग्रहण करें, केवल वह नहीं जिसे हम प्राथमिकता देते हैं। नम्रता से उस वचन को ग्रहण करो जो तुम में बोया गया है, जो तुम्हें बचा सकता है। आप इस वचन में तोड़–मरोड़ करना नहीं चाहते हैं। यह वचन ही तुम्हें बचाता है। वचन को नम्रता से ग्रहण करें।

निरन्तर वचन को याद रखें

दूसरा, हम निरन्तर वचन को याद रखते हैं। अब, मैं चाहता हूँ कि आप इन अन्तिम दो को 22 से 25 तक के पदों में देखें। और वे एक साथ जुड़े हुए हैं। वचन को निरन्तर याद रखें। पद 25 को देखें जहाँ वह कहता है, *"जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है।"* "ध्यान करता रहता है।" यह एक अच्छा शब्द है। नये नियम की मूल भाषा में इसका शाब्दिक अर्थ है, अध्ययन करना, जाँचना, देखना।

तस्वीर इस प्रकार है जैसे मेरा तीन वर्षीय कालेब जब सड़क पर चलता है, और उसे खटमल पसन्द है, और वहाँ वह खटमल को खोज लेता है। वह उन्हें ढूँढ़ सकता है। और वह सड़क पर सबसे छोटे खटमल को देखता है। वह एकदम से रूक जाता है, नीचे झुकता है और उस छोटे से खटमल को ध्यान से देखता है। वह उसे देखते ही रहता है। खटमल वहीं बैठा है। वह बैठा उसे देख रहा है। और यही तस्वीर है।

इसे ध्यान से देखना। अपने जीवन की व्यस्तता में रूक जाएँ। अपने मार्ग में रूक जाएँ। वचन को खोलें और उसे देखें। ध्यान से देखें। परमेश्वर के लोगो, दिन के लिए परमेश्वर से थोड़े से वचन, एक छोटे से धार्मिक मनन से सन्तुष्ट न रहें। नहीं। वचन में ध्यान से देखें। इसका अध्ययन करें। याद रखें, भूल न जाएँ। यही तस्वीर है। *"पर जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिए आशीष पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं पर वैसा ही काम करता है।"* (याकूब 1:25). इसे अपने आप में सोख लेना ताकि आप इसे भूल न जाएँ। अब पुराने नियम से एक और बात। व्यवस्थाविवरण 6 पर जाएँ।

व्यवस्थाविवरण का अर्थ है "दूसरी व्यवस्था।" और व्यवस्थाविवरण परमेश्वर के लोगों के वायदे के देश में प्रवेश करने के इतिहास से पहले है। यह व्यवस्था का पुनः स्मरण है। और यहाँ व्यवस्थाविवरण में व्यवस्था की तस्वीर है, वायदे के देश में जाने से पहले परमेश्वर के लोगों द्वारा व्यवस्था को याद किया जाना। यह बाइबल के उन परिच्छेदों में से एक है जिसे यदि आपने रेखांकित नहीं किया है तो मैं आपको उस पर निशान लगाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहूँगा। यह पुराने नियम में, और यहूदी मत में एक विशाल परिच्छेद है। परिच्छेद शेमा कहलाता है। यह परमेश्वर के लोगों के बीच विश्वास की तस्वीर के समान है। पद 4, व्यवस्थाविवरण 6:4. और सोचें यह कैसे याद रखने से संबंधित है।

> *"हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है; तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना। और ये आज्ञाएँ जो मैं आज तुझ को सुनाता हूँ वे तेरे मन में बनी रहें; और तू इन्हें अपने बालबच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना। और इन्हें अपने हाथ पर चिन्ह के रूप में बाँधना, और ये तेरी आँखों के बीच टीके का काम दें। और इन्हें अपने अपने घर के चौखट की बाजुओं और अपने फाटकों पर लिखना।"* (व्यवस्थाविवरण 6:4–9).

इसे हर जगह रखना। वचन से पूर्ण, उसे अपने अन्दर सोखना। परन्तु पद 10 को सुनें:

> *"जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उस देश में पहुँचाए जिसके विषय में उसने अब्राहम, इसहाक, और याकूब नामक तेरे पूर्वजों से तुझे देने की शपथ खाई, और जब वह तुझ को बड़े बड़े और अच्छे नगर, जो तू ने नहीं बनाए, और अच्छे अच्छे पदार्थों से भरे हुए घर जो तू ने नहीं भरे, और खुदे हुए कुएँ, जो तू ने नहीं खोदे, और दाख की बारियाँ और जैतून के वृक्ष, जो तू ने नहीं लगाए, ये सब वस्तुएँ जब वह दे, और तू खाके तृप्त हो, तब सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि तू यहोवा*

को भूल जाए, जो तुझे दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है।" (व्यवस्थाविवरण 6:10–12).

उसने कहा, याद रख, याद रख। दो अध्याय आगे अध्याय 8 पर जाएँ। मैं चाहता हूँ कि आप उस भाषा को सुनें जब परमेश्वर अपने लोगों से कहता है कि वे उसकी आज्ञाओं और विधियों को याद रखना भूल न जाएँ। व्यवस्थाविवरण 8:10 को सुनें।

और तू पेट भर खाएगा, और उस उत्तम देश के कारण जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देगा उसे धन्य मानेगा। इसलिए सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर उसकी जो जो आज्ञा, नियम, और विधि मैं आज तुझे सुनाता हूँ उनका मानना छोड़ दे; ऐसा न हो कि जब तू खाकर तृप्त हो, और अच्छे अच्छे घर बनाकर उनमें रहने लगे, और तेरी गाय–बैलों और भेड़–बकरियों की बढ़ती हो, और तेरा सोना, चाँदी, और तेरा सब प्रकार का धन बढ़ जाए, तब तेरे मन में अहंकार समा जाए, और तू अपने परमेश्वर यहोवा को भूल जाए, जो तुझ को दासत्व के घर अर्थात् मिस्र देश से निकाल लाया है, और उस बड़े और भयानक जंगल में से ले आया है, जहाँ तेज विषवाले सर्प और बिच्छू हैं और जलरहित सूखे देश में उसने तेरे लिए चकमक की चट्टान से जल निकाला, और तुझे जंगल में मन्ना खिलाया, जिसे तुम्हारे पुरखा जानते भी न थे, इसलिए कि वह तुझे नम्र बनाए, और तेरी परीक्षा करके अन्त में तेरा भला ही करे। और कहीं ऐसा न हो कि तू सोचने लगे कि यह सम्पत्ति मेरे ही सामर्थ और मेरे ही भुजबल से मुझे प्राप्त हुई। परन्तु तू अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण रखना, क्योंकि वही है जो तुझे सम्पत्ति प्राप्त करने की सामर्थ इसलिए देता है, कि जो वाचा उसने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर बाँधी थी उसको पूरा करे, जैसा आज प्रकट है। (व्यवस्थाविवरण 8:10–18).

परमेश्वर के वचन को भूलना परमेश्वर के लोगों के लिए एक सतत् परीक्षा होगी। और याकूब 1 में याकूब भी इसी के बारे में बात कर रहा है। वह जानबूझकर एक व्यक्ति के इस हास्यास्पद रूपक का प्रयोग करता है कि वह अपने आप को दर्पण में देखकर चला जाता है और पुलिस की पंक्ति में अपने आप को नहीं ढूँढ़ पाता। उसे बिल्कुल भी नहीं पता कि वह कैसा दिखता है। वचन को देखना और जाकर भूल जाना भी ऐसा ही है। वचन को याद रखें। वचन को याद रखें। इसे अपने अन्दर छिपा लें। अपने अन्दर सोख लें।

हम यहीं पर हैं। आइए हम इसे अपने सामने रखें और एक–दूसरे के साथ ईमानदार रहें। हम परमेश्वर के वचन को सुनने के लिए एक साथ बहुत समय व्यतीत करते हैं, लेकिन ईमानदार रहें, वहाँ से निकलते ही, हम बहुत कुछ भूल जाते हैं। भोजन के समय तक, हम और अधिक भूल जाते हैं। और यदि हम वचन को याद रखने के लिए कार्य न करें तो सुबह उठकर नौकरी के लिए जाने, सप्ताह की शुरूआत के समय तक, उस में से अधिकाँश भाग धुँधला हो चुका होता है। यह महत्वपूर्ण है।

अब, मेरी चिन्ता यह है, मेरी परेशानी यह है कि हमारे समय में लोगों ने कहा है, ठीक है, लोग ज्यादा याद नहीं रख पाते हैं, इसलिए जब सन्देश का प्रचार करने की बात हो, तो बहुत अधिक करने का प्रयत्न न करें। थोड़ा सा। छोटा और मधुर। इसे एक विचार के रूप में बनाएँ क्योंकि लोग केवल इतना ही याद रख पाते हैं। और मुझे निश्चय है कि परमेश्वर के वचन को सोखने का सर्वोत्तम तरीका उसके अध्ययन में कम समय बिताना नहीं है। अपने दिलों और अपने मनों और अपने जीवनों में परमेश्वर के वचन को सोखने का सर्वोत्तम तरीका एक साथ एकत्रित होने के समय अपने आप को उस में डुबा देना है और न केवल एक साथ एकत्रित होने के समय, बल्कि पूरे सप्ताह भर उसकी ओर लौटना।

इसे निरन्तर, निरन्तर, निरन्तर याद रखें। इसी कारण हम वचनों को याद करते हैं। और लोग कहते हैं, "मैं याद नही कर सकता, मैं वचन को याद नहीं कर सकता।" मैं इससे पूरी तरह असहमत हूँ। और मैं यहाँ सावधान रहना चाहता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि हम सबके सीखने की अलग–अलग शैलियाँ और याद करने की अलग–अलग क्षमताएँ हैं। कोई सन्देह नहीं। और कुछ लोगों की याददाश्त दूसरों से बेहतर होती है। यह केवल एक तस्वीर है। यह हमारे बीच की विविधता है। कोई सन्देह नहीं। साथ ही, भजन 19 कहता है वचन सोने से और कुन्दन से भी बहुमूल्य है।

तो मैं पूछता हूँ, यदि मैं आपसे कहूँ कि इस समय से आज आधी रात के समय के बीच आप जितने वचनों को याद करते हैं उन में से प्रत्येक के लिए मैं आपको 1,000 डॉलर दूँगा तो? आप बहुत जल्दी याद करना सीख सकते हैं। मेरा मतलब है, हम पूरे दिन याद करेंगे, क्या नहीं? तो फिर क्या हम विश्वास करते हैं कि यह वचन सोने से भी बहुमूल्य है? तो सवाल यह है कि हम वचन को किस प्रकार का महत्व देते हैं? इसे याद रखें। पासबान के रूप में, हमारी अलग–अलग क्षमताओं को जानते हुए, मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहता हूँ कि पवित्र वचन को याद करने के आत्मिक अनुशासन के अभ्यास के लिए हरसंभव प्रयास करें। मुझे निश्चय है कि जब वचन हमारे दिलों और मनों में बैठ जाता है तो यह हमारी मसीहियत को पूर्णतः बदल देता है। यह सब कुछ बदल देता है।

यह हमारे प्रार्थना जीवन को बदल देता है क्योंकि हम उसके वचन के अनुसार प्रार्थना कर रहे हैं। यह हमारी परीक्षाओं को बदल देता है। मत्ती 4 में यीशु की तीर बार परीक्षा हुई। हर बार वह क्या करता है, वह वचन से कहता है, "यह लिखा है।" क्या आप सोचते हैं कि मत्ती 4 में यीशु को पवित्रशास्त्र से उद्धृत करना पड़ा? नहीं। यीशु इस प्रकार का व्यक्ति था जो अपनी इच्छानुसार कुछ भी कह सकता था और वह क्या बन जाता? पवित्रशास्त्र।

उसमें इस प्रकार की ताकत थी, परन्तु वह हमें इस वचन को दिखा रहा है *"मैं ने तेरा वचन अपने हृदय में छिपा रखा है ताकि तेरे विरूद्ध पाप न करूँ।"* (भजन 119:11). यह वचन आपके अन्दर बैठ जाए। पुरूषो, एक साथ वचन को याद करने में अपने परिवार की अगुवाई करें। अकेले अभिभावको, वचन को याद करने में अपने बच्चों की अगुवाई करें। छात्रो, एक साथ वचन को याद करें। इसे करें। इसे करें। इसे अपने हृदय में छिपा लें।

इसे याद रखें। इसे भूल न जाएँ। इसे निरन्तर याद रखें। यदि नहीं, तो हमने जो सुना है उसे बाहर निकलते ही भूल जायेंगे। यह खतरनाक है। मैं यहाँ तक कह सकता हूँ कि यह दोषी ठहराने वाला होगा। और जब वह धोखे की बात करता है तो वह इसी के बारे में बात कर रहा है। याकूब कह रहा है, तुम सोचते हो कि तुम परमेश्वर के सामने सही हो क्योंकि तुमने वचन को सुना है, परन्तु तुम भूल जाते हो कि वचन ने क्या कहा था, और तुम इसका अभ्यास नहीं कर रहे हो। वास्तविकता यह है कि तुम अपने आप को धोखा दे रहे हो और तुम्हारा धर्म व्यर्थ है।

इतनी बड़ी बात, तुम लम्बे समय तक एक साथ वचन का अध्ययन करने के लिए रविवार सुबह एकत्रित होते हो। वास्तविकता यह है यदि हम इसे भूल रहे हैं और इसका अभ्यास नहीं कर रहे हैं, तो हमारे जीवन के बारे में तस्वीर यह है, "धोखे में और दोषी।" तस्वीर यह है। हमें इस वचन को याद रखने के बारे में सावधान रहना है। यह सम्पूर्ण तस्वीर है। संसार को अलग कर दो– नैतिक मलिनता, बुराई। इसे अलग कर दो। टीवी के वास्तविकता कार्यक्रमों को अलग कर दो। इन्टरनेट पर बिताए जाने वाले समय को अलग कर दो। एक फिल्म को अलग कर दो। आप यह देखकर चौंक जायेंगे कि जो दो घण्टे आप फिल्म देखने में व्यतीत करते हैं उस से आप वचन को अपने अन्दर रखने के लिए क्या कर सकते हैं। यदि हम वचन को केवल इस तरह देखते। पुरूषो, मैं आपको चुनौती देता हूँ, मैं आपको चुनौती देता हूँ कि आप इस संसार को एक खेल खेलने वाले उन्नीस वर्षीय बालक के आँकड़ों से बेहतर जानें। इस वचन को जानें। इसे अपने हृदय में रहने दें ताकि आप पूरे दिन अपने बेटों और बेटियों से इसके बारे में बात कर सकें।

पूरे दिल से वचन को मानें

अपने दिलों में आप इसे कहाँ छिपाते हैं। यह आपके मनों में है। आपके द्वार की चौखटों पर। इसे न भूलें। वचन को सुनें। वचन को नम्रता से ग्रहण करें। निरन्तर वचन को याद रखें। और फिर वचन को पूरे दिल से मानें। यह तीसरा तरीका है जिस से हम वचन का प्रत्युत्तर देते हैं। हम वचन को पूरे दिल से मानते हैं।

पद 22 वास्तव में याकूब की सम्पूर्ण पुस्तक का शीर्षक पद है। *"परन्तु वचन पर चलने वाले बनो, और केवल सुनने वाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं।"* (याकूब 1:22–23). और मुख्य बात यह है याकूब कह रहा है कि वचन कार्य का आह्वान करता है। और यदि कोई कार्य नहीं है, तो इसका अर्थ है कि वचन को ग्रहण नहीं किया गया है। यह आज हमारी बनाई हुई मसीहियत के मुँह पर लगता है, यह विचार कि आप यीशु की आज्ञा माने बिना यीशु को ग्रहण कर सकते हैं। नहीं।

यदि यह जीवन में कार्यरूप में नहीं आता है तो आपने कुछ भी ग्रहण नहीं किया है। अब, स्पष्टतः, हम में से कोई भी सिद्ध नहीं है, परन्तु तस्वीर यह है जब आप यीशु के वचन को ग्रहण करते हैं, जब आप नम्रता से यीशु को ग्रहण करते हैं, उसका वचन आप में बोया जाता है और यह आप से कार्य करवाता है। आपके बाहर जो हो रहा है उसे देखकर आप बता सकते हैं कि वचन आपके अन्दर है। और यदि हमारे बाहर कुछ भी नहीं हो रहा है, तो सवाल यह है, क्या हमारे अन्दर कुछ है, क्योंकि वचन सामर्थी है।

परमेश्वर ने यिर्मयाह और यहेजकेल में यही वायदा किया है। मैं अपना वचन तुम्हारे अन्दर रखूँगा, और यह तुम्हारे जीवन में सब कुछ बदल देगा। इसलिए जब आप इसे ग्रहण करते हैं तो आप इसे लागू करेंगे। तस्वीर यही है। मत्ती 7, पहाड़ी उपदेश में यह समान लगता है। जब यीशु कहते हैं, "जो मुझे प्रभ, प्रभु कहता है वह नहीं, परन्तु केवल वही स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेगा जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पूरी करता है।" (मत्ती 7:21). इसी कारण पहाड़ी उपदेश के अन्त में वह कहते हैं, *"इसलिए जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान ठहरेगा जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया। और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आन्धियाँ चलीं, और उस घर से टकराईं, फिर भी वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नींव चट्टान पर डाली गई थी।"* (मत्ती 7:24–25).

सुना और लागू किया। लेकिन, जो *"कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता"*– यह किसी अन्यजाति के बारे में नहीं कहा गया है जो वचन को सुनना ही नहीं चाहता। यह उन धार्मिक लोगों के बारे में है जो परमेश्वर के वचनों को सुनते हैं और उन पर नहीं चलते हैं। यीशु कहते हैं, *"तुम अपना घर बालू*

पर बना रहे हो। और मेंह बरसा और बाढ़ें आईं, और आन्धियाँ चलीं और उस घर से टकराईं और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।" (मत्ती 7:27).

भाइयो और बहनो इससे न चूकें। यदि आपका जीवन केवल यीशु के वचनों को सुनने पर बना है, तो आपका जीवन अन्त में और अनन्त रूप से विनाश में समाप्त होगा। यदि आपका जीवन एक के बाद एक रविवार को केवल यीशु के वचनों को सुनने पर बना है और यह सब केवल इतना ही है, यदि यह सब यहीं पर समाप्त हो जाता है, तो आपका जीवन अन्त में और अनन्त रूप से विनाश में समाप्त होगा। याकूब इसे दूसरी रीति से बता रहा है, पद 25, *"जो मनुष्य ध्यान देता रहता है।"* मुझे यह भाषा पसन्द है। *"स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर।"* (याकूब 1:25). हाँ।

यह वाक्यांश, "स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था"– वह पुराने नियम की मूसा की व्यवस्था के बारे में नहीं कहता है। यह व्यवस्था मसीह में, मसीह के वचनों में और मसीह के सत्य में सिद्ध होती है जो हमें आजाद और मुक्त करते हैं। जब आप आधुनिक मसीहियत में आज्ञापालन की बात करते हैं, व्यवस्थाओं और नियमों का पालन, तो लोग कहते हैं, "विधिवाद!" और वे भागने लगते हैं। याकूब कह रहा है, नहीं। तुम व्यवस्था से मत भागो। व्यवस्था की ओर भागो जो स्वतंत्रता लाती है। भजन 119 हमें यही बताता है। *"जब तू मेरा हियाव बढ़ाएगा तक मैं तेरी व्यवस्था के मार्ग में दौड़ूँगा।"* (भजन 119:32). इसकी खूबसूरती यह है कि यहाँ पर हम विधिवाद से अपनी रक्षा करते हैं, क्योंकि हमें महसूस होता है कि हम व्यवस्था का पालन करने के प्रयास में यह नहीं कर सकते हैं। यह हमारे अन्दर बोया गया वचन है, हमारे अन्दर का आत्मा, जो परमेश्वर के अनुग्रह से, व्यवस्था का पालन करने में हमारी सहायता करता है। परन्तु वह मसीह के वचन से भागने में हमारी सहायता नहीं करता है। वह इस प्रकार मसीह की आज्ञाओं की ओर हमें बढ़ाता है कि याकूब कहेगा, जो सिद्ध व्यवस्था पर निरन्तर ध्यान लगाए रहता है, इसे करता रहता है, और जो सुना है उसे भूलता नहीं, परन्तु उस पर चलता है, वह जो कुछ करे उस में आशीष पाएगा।

"इससे ऐसा लगता है कि परमेश्वर की आशीष आज्ञापालन की शर्त पर टिकी है। क्या आप कह रहे हैं कि मेरे जीवन में परमेश्वर की आशीष मेरे आज्ञापालन की शर्त पर आधारित है?" मैं यह नहीं कह रहा हूँ। याकूब कह रहा है। बाइबल कह रही है। यीशु कह रहे हैं। हम यीशु की इस प्रकार की तस्वीर बनाते हैं जैसे कि वह सर्वोच्च राजा नहीं है जो पूर्ण आराधना और आज्ञापालन के योग्य हो या उसकी मांग करता हो, जैसे कि आज्ञापालन वैकल्पिक हो क्योंकि हम जैसे हैं वैसे ही यीशु हमसे प्रेम करते हैं। अब, मैं यहाँ किसी भी अर्थ में सत्य को कम नहीं करना चाहता, परन्तु हम उसके प्रेम के योग्य नहीं हैं, और कुछ भी

ऐसा नहीं है जिसे करके हम उसके योग्य बन सकें। हम परमेश्वर का अनुग्रह अर्जित करने के लिए नहीं जीते हैं, परन्तु यथार्थ यह है, यीशु ने यूहन्ना 15 में कहा, *"जो आज्ञा मैं तुम्हें देता हूँ, यदि उसे मानो तो तुम मेरे मित्र हो।"* (यूहन्ना 15:14). यदि तुम मेरी आज्ञा को मानो।

यूहन्ना 15, उसने कहा, "यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे" (यूहन्ना 15:10). 1 यूहन्ना 2, वह कहता है, "जो कोई यह कहता है, मैं उसे जान गया हूँ, और उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है और उसमें सत्य नहीं।" (1 यूहन्ना 2:4). यह एक कठोर भाषा है। तो इसका क्या अर्थ है? हम इन सबको कैसे समझते हैं? हम विधिवाद से कैसे बचते हैं—यह सोचते हुए कि हम परमेश्वर का अनुग्रह पाने वाले हैं, परमेश्वर तक पहुँचने वाले हैं। यही खूबसूरती है। इससे न चूकें। यहीं पर यह सब एक साथ मिलता है। जब आपने पद 21 में ऊपर देखा जहाँ लिखा है, "उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है," तो क्या आपने उसके अर्थ को वहीं पर समझ लिया था? याकूब 1:21 के इस वचन को सुनें, *"इसलिए सारी मलिनता और बैर भाव की बढ़ती को दूर करके, उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है।"* याकूब 1:21 में उद्धार ग्रहण करने के द्वारा आता है। ग्रहण करने के द्वारा।

तस्वीर यह है। परमेश्वर अपने अनुग्रह के द्वारा, अपने वचन को हमारे हृदयों में रखता है, अपने आत्मा को हमारे हृदयों में रखता है, यह सब हमने देख लिया है। वह हमें आज्ञा मानने के लिए आगे बढ़ाता है क्योंकि उद्धार में आज्ञापालन शामिल है, परन्तु यह आज्ञापालन परमेश्वर के अनुग्रह और कार्य तथा हमारे दिलों में उसके वचन पर आधारित है। और इसलिए यह इस पर निर्भर नहीं है कि हम परमेश्वर के अनुग्रह को पाने के लिए क्या करते हैं। वास्तविकता यह है कि परमेश्वर सारा कार्य कर रहा है, परन्तु यहाँ वह इस प्रकार के कार्य को प्रकट कर रहा है। और यहीं पर हम परमेश्वर की आशीष को अनुभव करते हैं, जब हम वचन को नम्रता से ग्रहण करते हैं, उसे अपने अन्दर बोते हैं जहाँ हम निरन्तर उसे याद रख सकें, उसे अपने हृदय में सोखते हैं और यह बाहर निकलता है और पूरे दिल से उसे मानते हैं।

यह भजन 1 में है। यह उन लोगों पर परमेश्वर की आशीष है जो उसके अनुग्रह से उसकी महिमा के लिए उसके वचन में चलते हैं। परमेश्वर करे ऐसा ही हो। पूरे दिल से वचन को मानें। एक बात जिससे मैं पासबान के रूप में सबसे अधिक चिन्तित होता हूँ वह यह है जब मैं मसीहियों को कहते हुए सुनता हूँ, "सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वचन को मानने का इच्छुक हूँ।" और, पुनः, वहाँ थोड़ी सच्चाई है क्योंकि एक इच्छुक हृदय को परमेश्वर तुच्छ नहीं जानता। तस्वीर यह है हाँ, परमेश्वर एक इच्छुक हृदय चाहता है

जिसने उसके सामने समर्पण किया हो। कोई सन्देह नहीं। इससे उसी प्रकार उसका सम्मान होता है जैसे एक सुनने वाला हृदय उसका सम्मान करता है। परन्तु परमेश्वर कहीं भी हमसे यह नहीं कहता है कि हम उसकी आज्ञा मानने की इच्छा करने तक ही रूक जाएँ। वह हमें बुलाता है, आज्ञा देता है कि हम उसकी आज्ञा मानें। वह यह नहीं कहता, "निर्धन की सहायता करने की इच्छा रख।" वह कहता है, "कंगाल की मदद कर।" वह यह नहीं कहता, "सुसमाचार को सुनाने की इच्छा रख।" वह कहता है, "सुसमाचार को सुना।" वह यह नहीं कहता, "अपवित्रता से मुड़ने और पवित्रता को खोजने की इच्छा रख।" वह कहता है, "पवित्र बन।" इसलिए हमें सावधान रहना है। हमें सावधान रहना है कि हम आज्ञा मानने की इच्छा के पीछे न छिपें जब परमेश्वर ने कहा है, "यह कर। इस पर चल। केवल सुनने वाला मत बन। यह जो कहता है उसे कर। मैं ने अपना वचन तेरे अन्दर डाला है। मैं ने इसे तेरे अन्दर बोया है। मैं ने अपना आत्मा तेरे अन्दर रखा है ताकि यह कर सके। मैं ने तुझे मानने के लिए बुलाया है, मैं ने तुझे मानने की आज्ञा दी है, इसलिए इसे कर।" यही मसीही जीवन है।

मैं बोझ के साथ प्रार्थना करता आ रहा हूँ क्योंकि मेरा अनुमान है कि इस विश्वास के परिवार में ऐसे भाई और बहन हैं जिनसे परमेश्वर उनके जीवन के किसी विशेष क्षेत्र में शायद एक दिन या दो या तीन दिन, शायद सप्ताहों से, शायद महीनों से, या शायद वर्षों से कुछ करने के लिए कहता आ रहा है। मैं नहीं जानता कि आपके जीवन में यह क्या होगा। यह अनाज्ञाकारिता का कोई क्षेत्र हो सकता है जिसे आप निरन्तर करते आ रहे हैं। और परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा, मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर का आत्मा आज आपके दिल को जगाए, यह कहने के लिए आपकी आँखें खोले, "हे परमेश्वर मुझे आज्ञा माननी है, और परमेश्वर ने मुझे उसकी आज्ञा मानने का अनुग्रह दिया है, उसने मुझे वह सब दिया है जो उसकी आज्ञा मानने के लिए जरूरी है।

उससे फिरें। शायद यह आज्ञा मानने में देरी का कोई क्षेत्र होगा। शायद यह घर या कार्य स्थल का कोई संबंध होगा या कोई निर्णय जो आपको लेना है। यह छोटा हो सकता है या बड़ा। और मैं किसी भी तरह आपको बिना सोचे या किसी धार्मिक सलाह से बचकर भागने के लिए प्रोत्साहित नहीं करना चाहता, ऐसा कुछ भी नहीं, परन्तु यदि परमेश्वर आपसे बात करता रहा है तो मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहता हूँ कि आज आपके जीवन का वह समय हो जब आप कहें, "ठीक है, मैं यह करूँगा।" एक पासबान के रूप में मैं आपको इसे करने की प्रेरणा दूँगा। आप जानते हैं कि परमेश्वर के वचन के अनुसार परमेश्वर का आत्मा आपसे क्या कहता रहा है। हम अत्यधिक शिथिल और निष्क्रिय हो सकते हैं। "ओह, मैं सकारात्मक नहीं हूँ,

बिल्कुल नहीं। दूसरे लोग क्या सोचेंगे? क्या यह वास्तव में सर्वोत्तम है?" और ये अच्छे सवाल हैं, परन्तु यदि हम सावधान नहीं हैं, तो जब परमेश्वर के वचन को मानने की बात आती है तो वे हमें रोक देंगे।

चीन की घरेलू कलीसिया के बारे में एक पुस्तक ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया था, जिसका नाम है *बैक टू जरूशलेम,* जिसे तीन चीनी पासबानों ने लिखा था। और अन्त में वे अन्तर के बारे में बात कर रहे थे, जिसे उन्होंने कहा विश्वासियों और चेलों के बीच अन्तर। लोग जो केवल कहते हैं कि वे मसीह पर विश्वास करते हैं और वे लोग जो वास्तव में मसीह के पीछे चल रहे हैं। और मेरा विचार है कि यह सुनने वालों और करने वालों के समान है। सुनें वे क्या कहते हैं, "सच्चे चेले आमतौर पर ऐसे लोग होते हैं जिन्हें बहुत कम लोग समझते हैं। उन्हें अस्थिर कट्टरवादियों के रूप में देखा जाता है।" यह अच्छा है। कट्टर। "अक्सर जो सरकार केवल विश्वास करने वालों के अस्तित्व को सहन कर लेती है वही उनका समूल नाश करने में कोई कसर नहीं छोड़ती है जो उसकी सीमाओं के अन्दर चेले बनाते हैं।" आपको समझ में आया? वे कह रहे हैं कि चीन की सरकार वास्तव में उन लोगों की परवाह नहीं करती है जो वचन को सुन रहे हैं। जो लोग वचन पर चल रहे हैं, वे लोग देशभर की जेलों में पाए जाते हैं।

विश्वासी, सुनने वाले, परमेश्वर के पीछे चलने का प्रयत्न करते हैं, लेकिन उनकी प्रार्थनाएँ और समर्पण उनके अनिश्चय से ढ़के रहते हैं। यदि वे कहीं जाने के लिए या राज्य के लिए कुछ करने के लिए राजा की बुलाहट को सुनते हैं, तो उन्हें लगता है कि सुरक्षित कदम बढ़ाने के लिए उन्हें अतिरिक्त प्रोत्साहन की आवश्यकता है। "पहले मुझे अपनी पत्नी, मेरे पासबान, मेरे बॉस और मेरी सास से बात करके देखने दो कि वे क्या कहते हैं। एक विश्वासी हमेशा यह आश्वासन चाहता है कि यदि वह यीशु के लिए कदम बढ़ाता है तो कुछ भल गलत नहीं होगा। जब उन्हें पूर्ण विश्वास हो जाता है कि कीमत स्पष्ट है और कोई हानि नहीं होगी तो वह अपना पहला कदम उठाने के लिए तैयार होते हैं।"

क्या हम भी अक्सर अपने आपको यहीं नहीं पाते हैं, चिन्तित कि क्या हम गलत निर्णय ले रहे हैं? खूबसूरती यह हैः मैं आपको उत्साहित करना चाहता हूँ, विश्वासियो, भाइयो और बहनो, मसीह आपके अन्दर है। उसका वचन आपके अन्दर बोया गया है। जब आप उसमें बने रहते हैं, तो उसका आत्मा आपको आगे बढ़ाता है। अतः निरन्तर उसमें बने रहें और अच्छाई पर भरोसा रखें। उसके अनुग्रह पर, उसकी अगुवाई पर, आपके अन्दर उसके वचन पर भरोसा रखें कि वह आपको सर्वोत्तम की ओर बढ़ाएगा। वह आपसे बढ़कर इच्छा रखता है कि आपके जीवन में आज्ञापालन हो। वह आपकी अगुवाई करेगा। *"तू अपनी समझ*

का सहारा न लेना, वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा।" (नीतिवचन 3:5–6).

यह आपके अन्दर बोए गए वचन, आपके अन्दर रखे गए आत्मा की खूबसूरती है। धीरज रखें। इससे प्रोत्साहित हों। और तभी वे कहते हैं, चेलों का नजरिया अलग होता है। चीन में बहुत से चेले परमेश्वर से विनती करते हैं कि वह अपनी ताकत का थोड़ा सा हिस्सा उन्हें दे दे। वे प्रार्थना करते हैं, "हे परमेश्वर, यदि आप मुझे अपने आत्मिक डायनामाईट में से थोड़ा से मुझे उधार दे दें, तो मेरा वायदा है कि मैं उसे सबसे अन्धेरे स्थान में ले जाऊँगा, उसे वहाँ रखूँगा, और प्रार्थना करूँगा कि आप स्वर्ग से आग भेजकर उसे उड़ा दें।" और परमेश्वर सदा ऐसा करता है। इसी प्रकार सुसमाचार इतनी तीव्र गति से चीन में फैला है। सुसमाचार चीन में तीव्र गति से इस कारण नहीं फैला है कि लोगों का एक झुण्ड वचन को सुन रहा है। यह इतनी तीव्र गति से इस कारण फैल रहा है क्योंकि लोगों का एक झुण्ड वचन को सुन रहा है और वचन को मान रहा है। एक कलीसिया के रूप में हमें सावधान रहना है कि हम शिथिल न हो जाएँ। हम सुनिश्चित करना चाहते हैं कि सब कुछ ठीक है। यदि हम सावधान नहीं हैं, तो हम 13 और 14 की गिनती में पड़ सकते हैं जहाँ हमें यह निर्णय लेने के लिए समिति की आवश्यकता पड़ती है कि हम इसमें या उसमें परमेश्वर पर भरोसा करेंगे या नहीं। और वास्तविकता यह है कि जब परमेश्वर बोलता है तो उसके लोग मानते हैं।

तो आपके जीवन में वह कौनसा क्षेत्र है जिनके बारे में परमेश्वर कह रहा है, "यह करो," और आपने अभी तक नहीं किया है? शायद परमेश्वर के अनुग्रह से आप इसीलिए इसे सुन रहे हैं कि आपको पहली बार यह अहसास हो कि आप अपने आप को आत्मिक रूप से धोखा दे रहे हैं। शायद आप एक या दो बार कलीसिया में गए हों या हो सकता है आप अपने जीवन भर कलीसिया में रहे हों, लेकिन आपकी मसीहियत में केवल सुनना और सुनना ही है। और निश्चित है कि आप कुछ करते हैं, कुछ ऐसी बातें जो आपकी जीवनशैली के अनुरूप हैं, जिन्हें आप सबसे उत्तम मानते हैं, लेकिन जब वचन आपका सामना करता है, आपको चुनौती देता है, आपको दोषी ठहराता है, आपको बदलता है, तो आप उसे अलग कर देते हैं। यदि मामला ऐसा है, तो आपके दिल के अन्दर देखने और यह सवाल पूछने की अत्यधिक आवश्यकता है, क्या वास्तव में वचन आपके अन्दर बोया गया है?

याकूब के दिनों में और यीशु के दिनों में धार्मिक लोगों को वचन का अत्यधिक ज्ञान था, लेकिन फिर भी वचन उनके हृदयों में बोया नहीं गया था। अतः मैं सबसे महत्वपूर्ण रूप से आपसे पूछता हूँ, क्या आपके

हृदय में वचन बोया गया है? क्या वचन ने आपको पूरी तरह से जन्म दिया है? क्या आपकी आँखें खुली हैं, इस तथ्य के प्रति कि ब्रह्माण्ड का सर्वोच्च पवित्र परमेश्वर आपके पाप को और उसके दण्ड को देखता है। और अपने अनुग्रह के द्वारा, उसने अपने पुत्र यीशु मसीह को, देहधारी परमेश्वर को संसार में भेजा कि वह आपके पाप के लिए आपके स्थान पर मरे, वह उस पाप के ऊपर जय पाकर कब्र में से जी उठा, स्वर्ग पर चढ़ा, और अपने आत्मा के द्वारा उसने हमारी आँखों को इस वास्तविकता के लिए खोला है कि आप यह न कहें, "हाँ मैं इस पर विश्वास करता हूँ," और आपके जीवन में कोई बदलाव न हो। इस प्रकार का सुसमाचार ऐसा नहीं चाहता है। इस प्रकार का सुसमाचार चाहता है कि अपने पूरे दिल और जीवन को उसके प्रभुत्व में समर्पित करके कहें, मैं जो कुछ भी हूँ उस सब के साथ मैं आप पर भरोसा रखता हूँ।

क्या यह आपके जीवन में हुआ है? और यदि नहीं, तो मैं आपको उत्साहित करता हूँ, चाहे आप कितने भी युवा या बुजुर्ग हों, चाहे कितने भी लम्बे समय से कलीसिया में रहे हों, अब अपने आपको धोखा न दें। उसके वचन को अपने हृदय में बोने दें और वह आपको पूरी तरह से बदल दे। इसके अनन्त परिणाम हैं। और फिर जब वह वचन आपके अन्दर है, आप कह सकते हैं, "ठीक है, मेरा मसीही जीवन केवल सुनने और सुनने के बारे में नहीं है। यह सुनी हुई हर बात को मानना है।"

मैं चाहता हूँ आप प्रार्थना करना शुरू करें, और मैं आपको प्रार्थना करने और यह कहने का निमन्त्रण देता हूँ, "हे परमेश्वर, मेरे जीवन के वे कौनसे क्षेत्र हैं जिनमें आप मुझे आज्ञा मानने के लिए कहते रहे हैं, यह करने के लिए कहते रहे हैं और मैं ने नहीं माना?"

यह छोटा या बड़ा हो सकता है। मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहता हूँ कि आप उसे लिख लें। और फिर आप कार्य के चरणों को लिखें कि आप किस तरह आज्ञा मानना शुरू करेंगे। परन्तु अपने मन में सावधानी से याद रखें कि यह इसके बारे में नहीं है जो आप कर सकते हैं, "ठीक है, अगली बार मैं बेहतर करूँगा।" यह आज्ञापालन को आपके जीवन की वास्तविकता बनाने के लिए वचन और परमेश्वर के आत्मा द्वारा परमेश्वर पर भरोसा करना है। आपको मसीह के अनुग्रह की आवश्यकता है। और इसलिए मैं आपको उसे लिखने के लिए और प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता हूँ कि "आज से मैं कैसे आज्ञा मानना शुरू करूँगा? मुझे क्या करना है? मैं इसे करूँगा।" मैं आपको उत्साहित करना चाहता हूँ कि आप इसे लिख लें और यह कुछ ऐसा होगा जिसे आप इस पूरे सप्ताह अपने और प्रभु के बीच अपने समय में निरन्तर याद रखेंगे।